Introduction

HANSA MEHTA LIBRARY

गुजरात के साठोत्तरी हिन्दी साहित्यकार

हिन्दी में स्नातकोत्तर शिक्षा सम्पन्न करने के बाद मेरी अभिरुचि गुजरात में सृजित हिन्दी साहित्य के प्रति आकर्षित हुई। डॉ. रमणलाल पाठक, प्रो. अम्बाशंकर नागर, डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, डॉ. विष्णु विराट, डॉ. किशोर काबरा, डॉ. रामकुमार गुप्त आदि अनेक विद्वानों के गंभीर शोधकार्य और उनकी वरिष्ठ समीक्षिक दृष्टि से मैं परिचित हुई और लगा कि हिन्दी सृजन के संदर्भ में गुजरात के साठोत्तरी साहित्यकारों के विशिष्ट साहित्य प्रदान का समुचित मूल्यांकन नहीं हो पाया है। मैं बड़ौदा, सूरत और अहमदाबाद में आती–जाती रही हूँ, बड़ौदा में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के तत्कालीन विभागाध्यक्ष तथा हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार प्रो. विष्णु विराट चतुर्वेदी के सम्पर्क में जब मैं आई तो ज्ञात हुआ कि अभी बहुत कुछ ऐसा साठोत्तरी साहित्य शेष है जिसका शोध की दृष्टि से मूल्यांकन नहीं हो पाया है। मैं चाहती थी कि इस कालावधि के हिन्दी साहित्य पर अनुसंधानपूर्ण अध्ययन करके उसका उचित मूल्यांकन किया जाय तथा समीक्षा के निकष पर इसे परीक्षित भी किया जाय।

मेरे विशेष अनुरोध पर प्रो. विष्णु विराट ने सहमति देकर मेरा विषय पीएच.डी. हेतु पंजीकृत करा दिया और प्रो. विष्णु विराट के मार्ग दर्शन में ही अपना शोधकार्य करने लगी।

पीएच.डी. हेतु पंजीकृत विषय पर मैंने कार्य करना प्रारंभ कर दिया। इसके लिए गुजरात में सृजित हिन्दी साहित्य के ऐतिह्य तथ्यों का अध्ययन मनन करना पड़ा। बड़ौदा की प्राच्य विद्या मंदिर की ग्रंथशाला का अवलोकन किया। विश्वविद्यालय की हस्तप्रतियों का अवलोकन किया तथा अब तक सम्पन्न उस विस्तृत कार्य का भी अध्ययन किया जो इस विषय में अब तक किया जा चुका था।

गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा गुजरात के अनेक वरिष्ठ हिन्दी लेखकों एवं कवियों के ग्रंथ प्रकाशित किये जा चुके हैं। अनेक दुर्लभ प्राचीन ग्रंथों की समीक्षाएँ तथा साठोत्तरी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत समीक्षाग्रंथों का भी प्रकाशन हो चुका है। इसके अतिरिक्त डॉ. सूर्यप्रकाश सिंह, डॉ. ज्योति छाजड़, डॉ. दयाशंकर शुक्ल, डॉ. मदनगोपाल गुप्त, डॉ. के.एम. शाह, डॉ. विष्णु विराट, डॉ. रमणलाल तलाटी आदि से भी मैंने सम्पर्क स्थापित किया जिन्होंने इस संदर्भ में उल्लेखनीय शोधकार्य किए हैं।

अब तक सम्पन्न हुए अनेक शोधकार्यों का विस्तार से अध्ययन मनन के उपरान्त मैंने यह शोध प्रबंध तैयार किया है, जिसमें प्रथम बार ही गुजरात के साठोत्तरी हिन्दी साहित्यकारों के संदर्भ में विस्तृत शोधपरक मूल्यांकन प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस शोधकार्य के लिए मुझे आणंद, नड़ियाद, अहमदाबाद, राजकोट, भावनगर, पोरबन्दर, भरूच, सूरत आदि अनेक नगर – ग्रामों का पर्यटन करना पड़ा तथा विवेच्य विषय की आधारभूत सामग्री का संचयन भी करना पड़ा।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय में गुजरात के हिन्दी साहित्य का विहंगावलोकन करते हुए ऐतिह्य तथ्यों का विवेचन किया गया है तथा पूर्ववर्ती साहित्य का विवरणात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में गुजरात के साठोत्तरी हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक विकास और उसकी वैविध्यता पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय में साठोत्तरी प्रमुख साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विवेचना तथा प्राप्य कृतियों के विश्लेषण प्रस्तुत किए गए हैं।

चतुर्थ अध्याय में गुजरात के साठोत्तरी हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट करते हुए इसके विस्तृत प्रसारण पर चर्चा की गई है।

पंचम अध्याय में गुजरात के साठोत्तरी हिन्दी सृजन की विविध विधाओं का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में गुजरात में हिन्दी साहित्य के विकास–क्रम को रेखांकित करते हुए गुजरात की हिन्दी संस्थाओं के महत्वपूर्ण अवदान को स्पष्ट किया गया है।

सप्तम अध्याय में समग्र अन्वेषण का मूल्यांकन करते हुए उपसंहार प्रस्तुत किया गया है, तथा संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

मेरे इस शोधकार्य में सहयोगी मेरे गुरुजनों, विद्वान साहित्यकारों एवं अनेक मित्रों का मार्गदर्शन मुझे मिला है। मैं उन सबका आभार व्यक्त करती हूँ। हिन्दी विभाग की सम्प्रति अध्यक्ष डॉ. शैलजा भारद्वाज, डॉ. सन्नो पांडेय, अहमदाबाद के डॉ. किशोर काबरा, डॉ. रामकुमार गुप्त, प्रो. अम्बाशंकर नागर, आणंद विद्यानगर के प्रो. नवनीत चौहान, अहमदाबाद गुजरात विद्यापीठ की हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. मालती दुबे, डॉ. साँचीहर द्वारका प्रसाद, डॉ. भगवत शरण अग्रवाल, प्रो. भगवानदास जैन आदि गुरु आचार्यों का मैं अत्यन्त विनय के साथ आभार व्यक्त करती हूँ, जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष मुझे मार्ग दर्शन प्राप्त होता रहा है।

मैं अपने गुरु एवं मार्ग दर्शक प्रो. विष्णु विराट का भी सश्रृद्धा आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में भी मुझे अनुकूल मार्ग दर्शन दिया और यह महत् शोधकार्य मुझसे सम्पन्न कराया।

अन्त में मैं अपनी सभी आत्मीयजन, परिवार एवं परीकर के सदस्यों के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने समय समय पर मेरा उत्साह वर्द्धन किया और मेरे इस शोधकार्य को सम्पन्न कराने में मुझे सहयोग प्रदान किया।